ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2016; 2(5): 1134-1137
www.allresearchjournal.com
Received: 23-03-2016
Accepted: 25-04-2016

दीपक कुमार
रिसर्च स्कॉलर, राजनितिक शास्त्र, OPJS विश्वविद्यालय चूरु राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
दीपक कुमार
रिसर्च स्कॉलर, राजनितिक शास्त्र, OPJS विश्वविद्यालय चूरु राजस्थान, भारत

भारत एवं पाकिस्तान के बिगड़े हुए सम्बन्धों का ऐतिहासिक दृष्टिकोण

दीपक कुमार

सारांश
1947 में भारत और पाकिस्तान के अलग-अलग होने के बाद से ही दोनों देशों के संबंध ठीक नहीं रहे हैं। जिसमें कश्मीर की समस्या का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस झगड़े को दुनिया के सबसे घातक संघर्षों में से एक माना गया है। 1999 में दोनों देशों के बीच में कारगिल विवाद हुआ जिसने धीरे धीरे एक युद्ध जैसा रूप ले लिया। हालांकि इसमें भारत ने विजय प्राप्त की परंतु दोनों देशों के रिश्तों में तनाव बढ़ता ही गया। भारत सरकार के अनुसार इसमें शामिल लोग पाकिस्तान द्वारा समर्थित थे। 1998 में भारत और पाकिस्तान दोनों ने परमाणु मिसाइलों का सफलतापूर्वक प्रशिक्षण किया, इससे पूरे विश्व में काफी हलचल हुई क्योंकि ये दोनों देश परंपरागत रूप से एक दूसरे के दुश्मन रहे हैं। भारत का दावा था कि उसे चीन के साथ आनेवाले संघर्ष के मामले में परमाणु हथियारों की जरूत पड़ सकती है। जिसके साथ भारत ने 1960 के दशक में सीमा युद्ध लड़ा था। पूर्व में पड़ोसी देश अफगानिस्तान के खिलाफ अमेरिका के नेतृत्व वाले युद्ध से चिंता पैदा हुई एवं इससे कश्मीर में तनाव बढ़ गया। क्योंकि नियंत्रण रेखा के साथ भारतीय और पाकिस्तानी सेना के बीच नियमित रूप से संघर्ष बढ़ता आया है। इन सभी झगड़ों का आरोप भारत और पाकिस्तान एक दूसरे पर लगाते रहे हैं परंतु पाकिस्तान के विरुद्ध पर्याप्त प्रमाण होने पर भी पाकिस्तान सरकार ने आतंकवाद के मुद्दे पर कभी भारत की मदद नहीं की अपितु पाकिस्तान ने हमेशा ही कश्मीरियों को हिंसा के लिए प्रेरित किया है। ऐतिहासिक दृष्टि भारत एवं पाकिस्तान के बीच वार्ताएँ एवं यात्राएं तो हुई हैं परंतु कोई उनके रिश्तों में कहीं कोई परिवर्तन नहीं आया।

मुख्य शब्दावली: भारत पाकिस्तान संबंध, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, आतंकवाद, कारगिल युद्द, चीन, परमाणु परीक्षण

प्रस्तावना:
भारत एवं पाकिस्तान एशिया के दो ऐसे देश हैं जो न केवल एक दूसरे से भौगोलिक रूप से बहुत करीबी हैं अपितु दोनों देशों के पास साझा अतीत भी है। अंग्रेजों के खिलाफ आजादी की लड़ाई दोनों देशों ने एक साथ मिलकर लड़ी थी क्योंकि उस समय भारत एक था और आज यह स्थिति है की दोनों देश एक दूसरे के विरुद्ध लड़ रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत एवं पाकिस्तान दोनों ने ही एक दूसरे पर आरोप लगाया है। दोनों ही देशों के पत्रकारों, रक्षा समीक्षकों एवं राजनैतिक दल प्रमुखों की राय पूरी तरह एक दूसरे से भिन्न हैं एवं आरोप प्रत्यारोप का सिलसिला इतना गहन है कि दोनों देशों के मध्य समझौते की सभी कोशिशें नाकाम रही हैं। प्रस्तुत शोध विद्यमान साहित्य की सहायता से उन ऐतिहासिक बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है एवं उन विचारों को प्रकट करता है जो भारत पाकिस्तान सम्बन्धों के खराब होने के कारणों की सही व्याख्या करते हैं। पानी का विवाद भारत पाकिस्तान सम्बन्धों के बीच एक मुख्य विवाद रहा है। Yaseen, Z. et al. (2016) [1] ने कहा कि पाकिस्तान और भारत साधारण इतिहास और संस्कृति वाले दो नजदीकी पड़ोसी देश हैं। इसलिए उनके बीच अच्छे सम्बन्ध होने चाहिए। लेकिन उनके रिश्ते हर समय शत्रु के समान बने रहते है। इन दोनों देशों के बीच में कश्मीर बहुत महत्वपूर्ण है, जिसके कारण तीन महत्वपूर्ण युद्ध लड़े गए हैं। पाकिस्तान हमेशा से ही शांति करने वाले उपायों का समाधान देता आया है, लेकिन भारत की प्रतिक्रिया आमतौर पर इतनी अच्छी नहीं है। लेखक का आरोप था कि भारत आजादी के 70 साल से अधिक समय के बाद भी दोनों देशों के बीच चल रहे कश्मीर और पानी के मुद्दे को हल करने के लिए पहल नहीं कर रहा है। दक्षिण एशिया में शांति, विकास और स्थिरता के लिए भारत एवं पाकिस्तान दोनों देशों के बीच संबंध बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। 1948 में भारत ने पाकिस्तान को पानी की आपूर्ति में कटौती कर दी। इस विषय को शुरू करने का मुख्य कारण यह है कि "पानी" वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण जरूरतों में से एक है। पानी युद्ध इसलिए भी हो सकता है क्योंकि दुनिया की बढ़ती आबादी के साथ यह महत्वपूर्ण

संसाधन लगभग खत्म हो गया है और ऊर्जा की मांग बढ़ रही है। भारत पाकिस्तान को परेशान करने के लिए नदी के ऊपर बांध बनाकर इस समझौते का उल्लंघन कर रहा है ताकि पाकिस्तान को अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़े।

एक अन्य लेखक Husaain, S.S. et al. (2019) [2] ने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच विरोध ऐतिहासिक रूप से संरचनात्मक और विचारधारा शत्रुता पर आधारित है जो जल्द ही समाप्त हो सकता है। भारत ने पाकिस्तान के सैद्धांतिक आधार को लगातार चुनौती दी है। भारत और पाकिस्तान के बीच परमाणु परीक्षण और हथियारों का अर्जन विवादों को सुलझाने के बजाय ऐतिहासिक दुश्मनी को मजबूत कर रहा है। कश्मीर का मुद्दा भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद का सबसे बड़ा कारण है जिसके कारण तीन युद्ध हुए हैं। इसने दोनों पक्षों के सामाजिक ताने-बाने और आर्थिक ढांचे को बिगाड़ कर रख दिया है। लेखक का मानना है कि भारत लगातार कश्मीर में कठिन से कठिन कानूनों को लागू करके और कश्मीरी लोगों के धार्मिक आंदोलन को रोकने के लिए अनैतिक साधनों का उपयोग करके मानव अधिकारों का उल्लंघन कर रहा है। हालांकि भारत ने कश्मीर को सबसे अधिक आर्थिक सुविधाएं प्रदान की हैं एवं यहाँ भारतीय सेना दिन रात तत्परता से कश्मीर के लोगों की हर परिस्थिति में रक्षा करती है।

विद्यमान साहित्य की समीक्षा:

Mir, S.A. and Wani, A.R. (2014) [3] के अनुसार कश्मीर के मुद्दे पर भारत और पाकिस्तान के विचारों में बुनियादी विविधता पाई गई है। ऐतिहासिक दृष्टि से कश्मीर एक ऐसा मुद्दा है जिसे पाकिस्तान ने द्विपक्षीय विभाजन के मूल के रूप में पहचाना है। 1948 में जब सरदार वल्लभ भाई पटेल सभी रियासतों को भारत में जोड़ने चले थे तब जूनागढ़, हैदराबाद तथा कश्मीर ने अपना भविष्य तय करने का फैसला किया कि वे भारत में शामिल होना चाहते हैं या पाकिस्तान के साथ जुड़ना चाहते हैं। पाकिस्तान ने अनियमित सेना को कश्मीर में प्रवेश करने की अनुमति देकर कश्मीर को जब से हथियाने का प्रयास किया है तब से भारत और पाकिस्तान देश के बीच में कश्मीर को लेकर कई युद्ध लड़े हैं। जिस प्रकार अनैतिक रूप से उनके संबंध कड़वाहट से भरे हुए हैं। दोनों देशों ने कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए हैं ताकि बेहतर संबंध हों और इस समस्या को हल किया जा सके लेकिन कोई लाभदायक परिणाम नहीं मिला है। कश्मीर दोनों देशों के लिए शांति का पुल हो सकता है। भारत और पाकिस्तान को कश्मीर समस्या को हल करने के लिए एक शांति प्रक्रिया और एक जटिल बातचीत का प्रस्ताव रखना चाहिए। उन्हें कश्मीर के संघर्ष पर बातचीत करके तालमेल स्थापित कर स्पष्ट रूप से प्रतिबद्धता बनाये रखनी चाहिए। यदि 2004-2005 के दौरान कश्मीर का मसला शांति से हल हो गया होता तो आगे कोई खून-खराबा नहीं होता। कश्मीर को बातचीत करने के लिए शामिल होना चाहिए, या संयुक्त राष्ट्र को स्वतंत्र और निष्पक्ष जनमत संग्रह के आयोजन में रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

सभी लेखकों ने भारत एवं पाकिस्तान के खराब सम्बन्धों के लिए कश्मीर विवाद को सबसे महत्त्वपूर्ण माना है। Ganguly, R. ने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर विवाद कभी न सुलझने वाली अस्थिरता और शत्रुता का मूल कारण है जिस पर विचार किया जाना चाहिए। पिछले पचास वर्षों में, दोनों पक्षों ने तीन परंपरागत युद्ध (दो सीधे कश्मीर पर) लड़े हैं और कई मौकों पर युद्ध के करीब आए हैं। पिछले दस वर्षों से, वे कश्मीर में एक 'सत्ता युद्ध' के लिए बाध्य हो रहे हैं, जो नफरत के लक्षण दिखा रहा है। यह पहले ही 10,000 से अधिक जाने ले चुका है और शायद 'धरती पर स्वर्ग' को बर्बाद कर दिया गया है। पाकिस्तान द्वारा सक्रिय रूप से प्रोत्साहित कश्मीर में आतंकवाद और भारत द्वारा बेरहमी दिया गया प्रत्युत्तर, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों पतन में है और सामूहिक विनाश के हथियारों दोनों देश आमने सामने खड़े नजर आते हैं पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच में एक आतंकवादी संगठन था जिसने कुछ वर्षों के लिए अफ़ग़ानिस्तान पर कब्ज़ा कर लिया था, शासन के बीच कठिन संबंध, भारत में चिंता का विषय बन गया है। 15 वें संवैधानिक संशोधन विधेयक (संविधान बिल में इस्लामीकरण) कहा जाता है, जिसमें पाकिस्तान के कानून को सर्वोच्च कानून बना दिया है और प्रधान मंत्री को पाकिस्तान की विधान-सभा में असाधारण शक्तियां दिलाने का सहज मार्ग भी चेतावनी के साथ दिखा रहा है।

Pattanaik, S.S. (2019) [5] ने बताया कि भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के लिए बातचीत सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू बन चुका है। जैसा कि कश्मीर में हिंसा जारी है, और भारत बातचीत शुरू करने की स्थिति में नहीं है क्योंकि भारत का जवाब स्पष्ट है कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद बंद नहीं करेगा उससे बातचीत नहीं की जाएगी। अतीत के कई चरणों में यह भी देखा गया है कि द्विपक्षीय संबंधों में कहीं न कहीं कश्मीर पर आकार बात अटक जाती है। अतीत में नागरिक समाज के स्तर पर कई कदम उठाए गए थे। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की बस यात्रा एवं पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति जनरल परवेज़ मुशर्रफ की भारत यात्रा ऐसे ही दो प्रयास थे परंतु इनसे अपेक्षाएँ बहुत ज्यादा थी और परिणाम कुछ नहीं निकला। आतंकवाद एक बड़ा मुद्दा रहेगा एवं व्यापक बातचीत विषय को हल करने के लिए हमेशा ही महत्त्वपूर्ण रहेगी।

पाकिस्तान को इस बात के लिए कदम उठाने की जरूरत है कि उसकी जमीन से होने वाली आतंकवादी गतिविधियों पर रोक लगे। यह बेहद महत्वपूर्ण है कि पाकिस्तान को पहले से ही आर्थिक कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) की धूमिल सूची में रखा गया है। हालांकि, बातचीत के मुद्दे पर पाकिस्तान सेना के साथ, दोनों देश द्विपक्षीय संबंधों में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं। जिससे दो कदम आगे और एक कदम पीछे हो सकते है, यह निश्चित रूप से एक प्रगति के रूप में होनी चाहिए। जिससे बातचीत चलती रहे। भारत पाकिस्तान शांति के हितधारकों का उत्साह बढ़ाना चाहिए जिससे इस तरह की बातचीत सुविधाजनक हो सके। यह संवाद प्रक्रिया है जो विभाजन के 70 वर्षों से परे दोनों पक्षों द्वारा किए गए अविश्वास और संदेह के घाव को ठीक करने में मदद कर सकती है।

Chaudhury, R.R. (2004) [6] ने एक जनमत संग्रह में प्रस्तावित किया है। कश्मीर की स्थिति दिसंबर 2003-जनवरी 2004 में बदल दी गई। दिसंबर 2003 के मध्य में रायटर के साथ एक साक्षात्कार मे पाकिस्तान के राष्ट्रपति मुशर्रफ ने एक साहसिक कदम में, सार्वजनिक रूप से कश्मीर में संयुक्त राष्ट्र के जनमत संग्रह के लिए पाकिस्तान की पारंपरिक मांग को छोड़ने के लिए, और कश्मीर विवाद को हल करने के लिए भारत से 'आधे रास्ते' में मिलने की पेशकश करने की अनुमति मांगी । मुशर्रफ ने वर्णित तौर पर कहा है कि, हमने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के जनमत संग्रह के प्रस्ताव को छोड़ दिया है। लेकिन बाद में पाकिस्तानी अधिकारियों के द्वारा इसका खंडन किया गया था, इसकी यही मान्यता थी कि भारतीय और पाकिस्तानी घुसपैठ के मद्देनजर रखते हुए एक संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रस्ताव कभी भी लागू नहीं किया जा सकता था। फिर भी यह भारत सरकार के लिए एक बड़ी अड़चन थी, जिसने मुशर्रफ के गवाही का प्रसन्नता पूर्वक स्वागत किया। इसके बाद, 6 जनवरी 2004 के संयुक्त प्रेस बयान में, भारतीय प्रधान मंत्री वाजपेयी और मुशर्रफ के बीच इस्लामाबाद में

बारहवें दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन के मौके पर होने वाली बैठक के बाद, दिल्ली ने माना कि कश्मीर एक विवादित क्षेत्र था। जनवरी 2004 में, भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्पष्ट रूप से यह संकेत दिया कि संयुक्त राज्य अमेरिका उपमहाद्वीप में शांति को बढ़ावा देने के लिए वास्तविक प्रयास एक 'दोस्त के रूप में, शामिल नहीं कर रहा है। वास्तव में, कश्मीर विवाद के समाधान को समाप्त करने की आवश्यकता है और भारत और पाकिस्तान की सरकारों को सार्थक और स्थायी समझौता करना चाहिए ।

Kalyanaraman, S. (2015) [7] कश्मीर का दोनों देशों के बीच एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण मुद्दा रहा है। कश्मीर में शांति व्यवस्था दोनों देशों के लिए जरूरी है। यह बड़ा मुद्दा इसलिए भी है कि इसकी भौगोलिक स्थिति भी ऐसी है। चीन भी इस क्षेत्र पर नजर रखता है एवं पाकिस्तान के लिए भी यह रणनीतिक रूप से बहुत महत्त्वपूर्ण है। यही कारण है कि दोनों देश इस विवाद को चहकार भी नहीं सुलझा पा रहे।

Dijkink, G. (2006) [8] ने पाया कि मुशर्रफ के अक्टूबर 1999 में सत्ता संभालने के बाद भारतीय प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ के बीच तीन दिवसीय शिखर सम्मेलन, संयुक्त बयान के बिना ही समाप्त हो गया। दोनों पक्षों ने बाद में अपने देशों के अस्थिर संबंधों पर काम करना जारी किया और अपने इरादे पर जोर दिया। हालांकि कुछ लोगों को शिखर सम्मेलन में सफलता की उम्मीद थी, लेकिन भारत और पाकिस्तान के बीच मतभेदों को हल करने के लिए एक प्रक्रिया पर सहमत होने में नेताओं की विफलता दोनों देशों के लिए एक बड़ा झटका था क्योंकि आम जनता को इस मुलाक़ात से बहुत आशाएँ थी। वैसे भी कारगिल युद्द के बाद भारत में पाकिस्तान के जनरल (कारगिल युद्ध के समय परवेज़ मुशर्रफ पाकिस्तानी सेना के जनरल थे) का स्वागत करके भारत ने एक बड़ी पहला की थी।

भारत ने हमेशा ऐतिहासिक प्रमाणों एवं तथ्यों के माध्यम से कश्मीर पर अपना दावा किया है साथ ही कश्मीर में समस्याओं को हल करने में पाकिस्तानी भूमिका को स्वीकार भी किया है। कश्मीर "मुद्दा" पाकिस्तान के साथ सूची पर समस्याओं की एक लंबी सूची में से एक है। कई लोगों का मानना है कि भारत एक ऐसी सीमा को स्वीकार कर सकता है जिसने कश्मीर के भारतीय और पाकिस्तानी कब्जे वाले हिस्सों को एक अंतरराष्ट्रीय सीमा में बदल दिया जाए। हालाँकि, भारत सरकार एवं पाकिस्तानी सरकार आरंभ से ही इस प्रकार के किसी भी समझौते को अस्वीकार करते हैं।

Begum, S. and Ahmed, S.N. (2016) [10] ने कहा कि कश्मीर विवाद समकालीन दुनिया के सबसे पुराने अनसुलझे अंतरराष्ट्रीय विवादों में से एक है। यह भारत और पाकिस्तान के बीच स्थायी शांति और दोस्ती के रास्ते की असली बाधा है। जब भी संबंधों के सामान्यकरण की उपलब्धि के उद्देश्य से ईमानदार प्रयास शुरू किए गए, उन्हें कश्मीर के कारण झटका लगा। इसे संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों के अनुसार हल किया जाना चाहिए था, जो विवादित क्षेत्र में जनमत संग्रह की मांग कर रहा था, लेकिन उन्हें इससे इनकार कर दिया गया था। भारत सरकार के नेतृत्व में जवाहरलाल नेहरू ने जनमत संग्रह कराने का वादा किया था लेकिन यह वादा अभी तक पूरा नहीं हुआ है। कश्मीरी की नियति अभी भी बाधित है। दोनों देशों ने चार बड़े युद्ध लड़े हैं और कई सीमा झड़पें हुई हैं लेकिन कश्मीर समस्या अनसुलझी है। वर्षों से आरोपों ने दक्षिण एशिया के दो प्रमुख देशों के बीच संबंधों की प्रकृति को निर्धारित किया है। दोनों पक्ष एक दूसरे के खिलाफ भड़काऊ बयानों में भी लिप्त हो जाते हैं जो उनके बीच पहले से चल रहे संबंधों को बढ़ा सकती हैं। पानी जैसे अन्य संघर्ष इसके साथ तुलना में कम खतरे वाले प्रतीत होते हैं।

निष्कर्ष:

कई ऐतिहासिक और राजनीतिक घटनाओं के कारण भारत-पाक संबंध हमेशा जटिल बना रहा है। भारत पाकिस्तान समर्थित आतंकवाद से चिंतित है और पाकिस्तान ने भारत की विदेश नीति के मामले, आंतरिक विकास, चर्चाओं और अन्य घरेलू मामलों पर नजर बनाई रखी है। भारत-पाकिस्तान संघर्ष आज एक ऐसा मुद्दा बनकर रह गया है जिसका समाधान होना न केवल कठिन है अपितु असंभव सा प्रतीत होता है। क्योंकि न तो दोनों देश आपस में बातचीत कर रहे हैं और न ही वे किसी तीसरे पक्ष की मध्यस्थता स्वीकार कर रहे हैं। इस सोच ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित किया है। दोनों के स्वतंत्र देश के रूप में स्थापना के बाद से शत्रु के रूप में ही सामने आए हैं। ऐसा नहीं है कि उन्होने अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किए परंतु उन प्रयत्नों के कोई भी सार्थक परिणाम नहीं निकल पाए हैं।

भारत और पाकिस्तान अपना अधिकांश सुरक्षा बजट कश्मीर पर खर्च कर देते हैं। हाल ही में हुई तनातनी के बाद भारत ने पाकिस्तान से MFN (विशेष राष्ट्र का दर्जा) भी छीन लिया था जिससे की पाकिस्तान को भारत की ओर से निर्यात बंद कर दिया गया था एवं आयात पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। पायलट अभिनंदन के साथ किए गए दुर्व्यवहार एवं भारत की इस पर राजनैतिक जीत का भी भारत पाकिस्तान सम्बन्धों पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा। अपितु ऐसा देखा गया है कि अंतर्राष्ट्रीय मंचो पर दोनों देश एक दूसरे को नीचा दिखाने की ही सोचते हैं।

भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा नीति पर पाकिस्तान की निरंतर नजर रहती है। आए दिन पाकिस्तान किसी न किसी बड़े हमले का नियोजन करता है। हालांकि पाकिस्तान ने हर बार यही कहा है कि ये हमले या तो आतंकवादी संगठन करते हैं या फिर कश्मीरी युवक। परंतु यह पूरा विश्व जाता है कि उन सबको पाकिस्तान की खूफिया एजेंसी आई एस आई से पूरा समर्थन मिलता है। भारत के लिए पाकिस्तान एवं कश्मीर एक बहुत बड़ा सुरक्षा दायित्व है। जिसने भारत के नीति निर्माताओं और अधिक कठोर निर्णय लेने पर विवश किया है। सीमा पार से आ रहा आतंकवाद भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बन गया चुका है।

वास्तव में कश्मीर की भारत में शामिल होने की प्रक्रिया उतनी सुदृढ़ नहीं रही जितनी एक राष्ट्र के लिए होनी चाहिए थी। कश्मीर यदि उसी समय बिना किसी शर्तों के भारत का अभिन्न अंग बनता तो ऐसी कोई भी स्थिति नहीं आती जिससे पाकिस्तान उस पर अपना दावा कर सके। ऐतिहासिक दृष्टि से न केवल कश्मीर अपितु ऐसे और अनेक पहलू हैं जो भारत और पाकिस्तान के बीच सम्बन्धों को खराब करते हैं जिनमें भारत -पाकिस्तान का धर्म के आधार पर विभाजन, ब्लूचिस्तान का मुद्दा, पाकिस्तान में हिंदुओं एवं गैर मुस्लिमों की स्थित। भारत में बाबरी मस्जिद का ध्वंस, मुंबई के बम विस्फोटों में पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी दाऊद इब्रहीम का शामिल होना आदि। वास्तव में या सभी मुद्दे धर्म के आधार पर भारत पाकिस्तान सम्बन्धों की आग में घी डालने का काम करते हैं।

इतिहास पाकिस्तानी सेना द्वारा कश्मीर में नियंत्रण रेखा पर लगातार गोलाबारी और कश्मीरी विद्रोहियों के हाथों जम्मू क्षेत्र में हिन्दुओं के नरसंहार से भरा पड़ा है। जब भी ये घाव दबते हैं तब कुछ न कुछ ऐसा नया हो जाता है जो उसी दर्दनाक इतिहास की

पुनरावृति करता है जिससे ये दोनों देश दशकों से दूर होने की कोशिश कर रहे हैं।

संदर्भ सूची:

1. Yaseen Z, Jathol I, Muzaffar M. Pakistan and India Relations: A Political Analysis of Conflicts and Regional Security in South Asia: Global Political Review (GPR) 2016;1(1):1-9.
2. Husaain SS, Mustafa G, Imran M, Nawaz A. The Indo-Pak Rivalry and the Kashmir Issue: A Historical Analysis in the Security Context of the South Asia: Journal of Political Studies 2019;26(2):73-84.
3. Mir SA, Wani AR. Kashmir-The origin of INDO-PAK Conflicts (War, Peace and Dialogue): Research on Humanities and Social Sciences 2014;4(25):115-116.
4. Ganguly R. India, Pakistan and the Kashmir Dispute: Asian Studies Institute & Centre for Strategic Studies.
5. Pattanaik SS. India- Pakistan relations: what lies ahead? unisci Journal 2019;49:149-170.
6. Chaudhury RR. The United States' role and influence on the India-Pakistan conflict 2004, 31-38.
7. Kalyanaraman S. Shooting for a Century: Finding Answers to the India-Pakistan Conundrum: Journal of Defence Studies 2015;9(3):167-180.
8. Dijkink G. When Geopolitics and Religion Fuse: A Historical Perspective: Geopolitics 2006;11:192-208.
9. The Agra Summit: South Asia Monitor 2001, 36.
10. Begum S, Ahmed SN. Changing Dynamics of Pakistan-India Relationship and Kashmir Predicament: JPUHS 2016;29(2):197-204.